उपसंहार

उपसंहार

सामाजिक उपन्यासों को आधुनिक हिंदी साहित्य में महत्त्वपूर्ण माना जाता है। सामाजिक उपन्यासों के जरिए उपन्यासकार समाज जीवन की पूर्ण झाँकी उजागर करने में सफल होते हैं जिससे उपन्यास सत्यता की कसौटी पर खरे उतरते हैं। गोविंद मिश्र जी एक सजग रचनाकार है। उनका जन्म सन 1940 ई. में अंतर्रा, बांदा जिला (उ.प्र.) में हुआ। अध्यापक माता-पिता की मेहनती वृत्ति बालक मिश्र जी में उतरती गई। प्राथमिक शिक्षा चरखारी गाँव में तथा उच्च शिक्षा इलाहाबाद शहर में हुई। एम्.ए. (अंग्रेजी) होने के बाद अध्यापन की नौकरी के साथ आय.ए.एस्. की परीक्षा दी और भारतीय राजस्व सेवा के लिए चुने गए। साथ ही वे अनुवाद ब्युरो के निर्देशक भी रहे हैं। पारिवारिक जीवन सामान्य व्यक्ति की तरह बीत रहा है। खेलने का शौक है और भ्रमण करने की वृत्ति के कारण देश-विदेश की यात्राएँ की है। मिश्र जी ने साहित्य की हर विधा में अपनी लेखनी चलाई है। उन्होंने आज तक चौदह कहानी संग्रह, सात उपन्यास, चार यात्रा वर्णन, तीन साहित्यिक निबंध, एक बाल साहित्य, एक कविता संग्रह आदि का सृजन किया है। साथ ही दूरदर्शन, विश्वविद्यालयों, अनुवाद क्षेत्र में उनके साहित्य की झलक दिखाई देती हैं। अनेक पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता मिश्र जी समाज के एक सफल अभिव्यक्ता हैं। इसी कारण वे नई पीढ़ी के बहुचर्चित साहित्यकार बने हैं। उनके उपन्यासों में समाज जीवन का चित्रण हुआ हैं।

इसी कारण समाज का अर्थ जानना आवश्यक है। कोशकार समाज शब्द को झुंड, समूह, विशिष्ट उद्देश्य से एकत्र रहनेवाले तथा काम करनेवाले लोग आदि अर्थो में स्पष्ट करते हैं, तो कुछ विद्वान आपसी सहचर्य, भावुकता, सामाजिक संबंध तथा व्यवस्था को समाज कहते हैं। इस आधार पर हम सामाजिक संस्था से निर्मित व्यक्ति समूहों की उद्देश्यनिहित बुनावट को समाज कह सकते हैं। इन्हीं सामाजिक संस्था के जरिए समाज का स्वरूप स्पष्ट होता है। समाज मनुष्य का बौद्धिक विकास, आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। उसे संस्कृति नुसार चलने के लिए बाध्य कर मनुष्य का जीवन सुखी बनाने में सहायक होता है। जीवन में समाज का महत्त्व अनन्य साधारण है। समाज को विद्वानों ने धन के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित किया है - उच्च वर्ग, मध्य वर्ग तथा निम्न वर्ग।

समाज जीवन की परिस्थिति और समस्याएँ रचनाकार के साहित्य पर प्रभाव डालती है। राजनीतिक परिस्थिति में कुछ संस्थाएँ राजनीति के हाथों की कटपुतलियाँ बनी हैं। इसी कारण भ्रष्टाचार दलबदलू वृत्ति जैसी अनेक राजनीतिक समस्याएँ निर्माण हुई हैं। सामाजिक परिस्थिाति में समाज के तीन वर्ग दिखाई देते हैं। उसमें शिक्षा, औद्योगिक विकास, नारी स्थिति, विदेशी प्रभाव, भौतिक साधनों का आकर्षण दिखाई देता है।

छात्र आंदोलन के जरिए अपनी शक्ति प्रकट करते हैं। साथ ही आर्थिक विपन्नता, विवाह, विवाह-विच्छेद से रूढ़ि-परंपरा के बंधन में शिथिलता, स्त्री-पुरूष संबंधों के विविध रूपों पर परिवार संस्था का आधारित रहना आदि मद्दों को मिश्र जी ने उपन्यासों में स्पष्ट किया है। इसी संगत-विसंगत परिस्थिति के कारण सामाजिक समस्या निर्माण होती है। इसमें नारी, विवाह, अन्याय/अत्याचार, गुंड़ागर्दी, आर्थिक विपन्नता, जैसी समस्याओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। तथा धार्मिक परिस्थिति में ईश्वर पर विश्वास, पूजा, रीति-रिवाज, का प्रचलन है जिससे अंधश्रद्धा, जातिभेद, सांप्रदायिकता जैसी धार्मिक समस्या सामने आती है। आज अर्थप्रधान, मनोरंजनात्मक, सांस्कृतिक परिस्थिति के साथ ही अनैतिकता, औपचारिकता जैसी अनेक सांस्कृतिक समस्याएँ निर्माण हो रही हैं।

मिश्र जी उपन्यासों में समाज जीवन को स्पष्ट करने के लिए समाज के उच्च वर्ग, मध्य वर्ग, निम्न वर्ग की स्थिति को चित्रित करते हैं। उन्होंने उच्च वर्ग के कुछ लोगों को भ्रष्ट दिखाया है तो मध्यवर्गीयों को अर्थ प्रिय, विदेशी प्रभाव से ग्रासित दिखाकर निम्नवर्गीयों की कड़ी मेहनती वृत्ति तथा भुखमरी जैसी समस्या को प्रस्तुत किया है। उपन्यासों में चित्रित समाज में कुछ अज्ञानी तथा परंपराप्रिय लोग हैं जिनमें जातीयता दिखाई देती है। आज जातीयता के नाम पर गुट बनाए जा रहे हैं तथा उसका फायदा कुछ राजनीतिज्ञ किस प्रकार उठा रहे हैं यह लाल पीली जमीन के तथा पाँच आँगनोवाला घर के बोससाहब तथा सन्नी के नेता आदि के माध्यम से चित्रित किया है। उनमें स्वतंत्रतापूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर भारत की परिस्थिति का अंकन मिश्र जी करते हैं। उसमें अंग्रेजी माध्यम, कम्पीटीशन, खेलकूद को बढ़ावा, छात्रांदोलन आदि के जरिए शिक्षा व्यवस्था की अच्छाई और बुराई, कस्बाई क्षेत्र के निम्नवर्ग का शोषण शहरी तथा कस्बाई क्षेत्र की आर्थिक विपन्नता को बोससाहब, दीवान, सुरेश वह अपना चेहरा के शुक्ला तथा मोहन आदि के जरिए स्पष्ट किया है। समाज में स्थित कोतवाल, शिवहरे, बोससाहब, राजन जैसे भ्रष्ट लोग शासन व्यवस्था को किस प्रकार खोखला बना रहे हैं तथा आज पंड़ित, साधू-महात्मा तथा तुम्हारी रोशनी में की सुवर्णा जैसी आधुनिका के कारण व्यसनाधीनता मंदिर, आश्रम तथा स्त्री तक किस प्रकार पहुँची है इस पर प्रकाश डाला है। रेश्मा, केशव ,बड़े, शैलजा जैसे युवा वर्ग प्रगतिशील बनकर देश की उन्नति में हाथ बंटाते हैं। तो कल्लू सुरेश, शिवमंगल, छोटू जैसे आक्रमक युवाओं से समाज में दहशत फैल रही है इस प्रकार मिश्र जी आज के युवाओं के दो रूपों को भी सामने रखते हैं।

मिश्र जी, विदेशी प्रभाव के कारण अंग्रेजी भाषा, स्वच्छंद प्रेम, औपचारिकता आदि वृत्ति को समाज में पाते हैं जिससे भौतिक साधनों का आकर्षण बढ़कर श्याम जैसा आदमी इन वस्तुओं को जीवन का अहम् हिस्सा मानता है। मिश्र जी विवेच्य उपन्यासों में शहरों की कलात्मक संस्कृति तथा गाँवों की मनोरंजनात्मक संस्कृति को भी स्पष्ट करते हैं। मिश्र जी विवाह के जरिए सफल-असफल विवाह को स्पष्ट कर इस बंधनों में चलती धोकेबाजी और शिथिलता दिखाते है। परिवार संस्था के जरिए जोगेश्वरी देवी का संयुक्त परिवार तथा मास्टर कौशल, राजन के विघटित परिवार की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डाला है। स्त्री-पुरूषों के वासनारहित

आत्मीक संबंध तथा यौन संबंध से बढ़ती अनैतिकता, सुखमय-दांपत्य का राज, विषम-दांपत्य के कारण की खोज करने के साथ-साथ आत्मीक, वात्सल्यमयी वेश्या का चित्रण करने में सफल हुए हैं।

इसके साथ-साथ भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, छात्रांदोलन, गुंड़ागर्दी जैसी राजनीतिक समस्या में देश के ऊपरी स्तर के भ्रष्टाचार तथा तिकड़मी राजनेता का छात्रांदोलन चलाना, शिक्षा क्षेत्र में भ्रष्टाचार करना जिससे गुंड़ागर्दी, हिंसा का बढ़ना, जातीय दंगे आदि समस्या को मिश्र जी उपन्यासों द्वारा प्रस्तुत करते हैं। सामाजिक समस्या में विघटित परिवार की त्रासदी का यथार्थ वर्णन और नारी समस्या में बलात्कारित नारी का आत्महत्या करना, नारियों का वासनात्मक नजरों का सामना करना, कामकाजी नारी का समय तथा उच्च अफ़सर की मर्जी का ध्यान रखना, पुरूषसमानाधिकार की माँग पर बंदिश लगना आदि को दर्शाया है। विवाह संस्था में अंतर्जातीय विवाह, अनमेल विवाह, बहु विवाह इन समस्याओं को मिश्र जी उपन्यासों में वास्तव रूप देने में सफल हुए हैं।

आर्थिक समस्या में आर्थिक विपन्नता, बेकारी, रिश्वतखोरी, मकान, भुखमरी की समस्या तथा शिक्षित अशिक्षित समाज की अंधश्रद्धा जातीयता सांप्रदायिकता जैसी धार्मिक समस्याओं को मिश्र जी ने उजागर किया है।

संस्कृति परिवर्तन से समाज में कुछ स्त्री-पुरूष स्वच्छंद प्रेम का सहारा लेकर संस्कृति को भुला रहे हैं तथा आधुनिक साधनों का आकर्षण आदि वृत्तियाँ बढ़कर एकल परिवार की वजह से आदमी अकेला पड़ रहा है। इसी कारण कहीं-कहीं पर युवा वर्ग व्यसनाधीनता की ओर झुक रहा है। मिश्र जी के उपन्यासों के कुछ पात्र उपर्युक्त समस्या से जूझते हुए मनोवैज्ञानिक समस्या का सामना कर अकेलापन, घुटनभरी जिंदगी बिताते हैं। इन्हीं समस्याओं को मिश्र जी हमारे सामने रखकर उस पर हमें सोचने के लिए विवश करते हैं। इसी कारण वे समस्या मूलक लेखक जान पड़ते हैं।

मिश्र जी ने समाज जीवन की विशेषताओं को हमारे सामने रखकर समाज को पूरा जानने का मौका हमें दिया है। बड़े जादव जी, जागेश्वरी देवी का संयुक्त परिवार आत्मीयता को बढ़ानेवाला आदर्श परिवार है जो आज के संक्रांती युग में विशेष बात है ऐसे परिवार के कारण देश प्रेमी भी देश को अपना परिवार मानकर उसके लिए अपने प्राण अर्पित कर आम लोगों से हटकर विशेष बन जाते हैं। ऐसे परिवार तथा देश में उत्सव, पर्व, मनोरंजन कला को महत्त्व देने वाले संस्कृति प्रिय लोग हमें लाल पीली जमीन, पाँच ऑगनोवाला घर के जागेश्वरी देवी के परिवार में दिखाई देते हैं। संस्कृति प्रिय लोग समाज में आनंदमयी वातावरण निर्माण करते हैं तो विद्रोही समाज के कारण आतंक का वातावरण निर्माण होता है। सुरेश, कल्लू, छोटू के साथ शन्नो, सुवर्णा जैसी नारी पुरूषसमानाधिकार की माँग को लेकर विद्रोही का रूप धारण कर अपने पति से अलग होती है। इसी विद्रोही वृत्ति के आगे कभी कभी देश की सरकार को भी झुकना पड़ता है। इस तरह विद्रोह सारे चमन को मिटा सकता है। मिश्र जी विवेच्य उपन्यासों द्वारा यही बताते हैं।

रचना, शांति, केशव की माँ, सुवर्णा, जागेश्वरी जैसी नारियाँ आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी, निर्भय हैं। इस तरह मिश्र जी नारी की सुधारित स्थिति को प्रस्तुत करते हैं जो समाज में उल्लेखनीय बात है। वे युवाओं की महत्त्वाकांक्षा के साथ मेहनतीवृत्ति, संघर्ष को दिखाकर आज के युवा वर्ग का यथार्थ चित्रण करने में सफल हुए हैं। साथ ही समलिंगी आकर्षण बच्चों के साथ बड़ों में भी बढ़ रहा है उसे रोकना आवश्यक है। लेकिन लाल पीली जमीन के मास्टरों की तरह पीट कर नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक तरिके से। इस तरह मिश्र जी समाज में चलती इस अनोखी वृत्ति को सामने रखकर समाज की विशेषता को सामने रखते हैं। कमलाबाई जैसी वात्सल्यमयी, कला प्रिय वेश्या समाज में कुछ ही मात्रा में मिलती है ऐसी वेश्या समाज में होना विशेष बात है।

इस तरह मिश्र जी समाज की उपुर्यक्त विशेषताओं के साथ समाज का समग्र चित्रण करने में सफल हुए हैं।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ :-

अनुसधान की उपलब्धियों के रूप में प्राक्कथन में उठाए गए तीन सवालों के उत्तर निम्न प्रकार से हैं -

प्रश्न (1) – क्या, मिश्र जी के व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर असर दिखाई देता है ?

मिश्र जी का जन्म अंतर्रा गाँव में हुआ है तथा प्राथमिक शिक्षा चरखारी गाँव में हुई। इसी कारण वे गाँव तथा कस्बाई क्षेत्र के समाज जीवन का हू-बहू वर्णन करते हैं, जो हमें लाल पीली जमीन तथा पाँच आँगनोवाला घर उपन्यासों में दिखाई देता है। उन्होंने एम्.ए.तक की शिक्षा ग्रहण की है। इसी कारण वे शिक्षा की अच्छाई बुराईयों को स्पष्ट करते हैं। तथा वे केंद्रिय कर निर्देशनालय में अफ़सर होने के कारण उनके एक शहरे से दूसरे शहर में तबादले होते रहे जिससे उन्होंने शासन व्यवस्था में चल रहे भ्रष्टाचार तथा कूटनीतिज्ञ राजनेता तथा शहरी जीवन को चित्रित किया है। साथ ही वे मध्यवर्गीय होने के कारण मध्यवर्गीय जीवन की हर छोटी-मोटी बात को स्पष्ट करते हैं। अत: उनके व्यक्तित्व का कृतित्व पर अधिक मात्रा में असर दिखाई देता है।

प्रश्न (2) – क्या, मिश्र जी समस्या मूलक लेखक हैं ?

मिश्र जी ने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक समस्याओं को समाज का कोना-कोना छानकर उन्हें विस्तार से पाठकों के सम्मुख रखा हैं। इसी कारण वे समस्या मूलक लेखक प्रतीत होते हैं।

प्रश्न (3) – क्या, मिश्र जी विवेच्य उपन्यासों में समाज का पूर्णत: चित्रण करने में सफल हुए हैं ?

मिश्र जी ने विवेच्य उपन्यासों में समाज के तीनों वर्गों का वर्णन विविध पहलुओं के आधार पर कर

विभिन्न समाज जीवन समस्या और विशेषताओं को चित्रित किया है जिससे वे समाज जीवन का चित्रण करने में सफल हुए दिखाई देते हैं।

अनुसंधान की नई दिशाएँ :-

(1) गोविंद मिश्र के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन ।

(2) गोविंद मिश्र के सामाजिक उपन्यासों का अनुशीलन ।

(3) गोविंद मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ ।

उपर्युक्त विषयों पर भविष्य में शोधकार्य किया जा सकता है।